एक वार में सात तमाम

फ्रायर

एक वार में सात तमाम

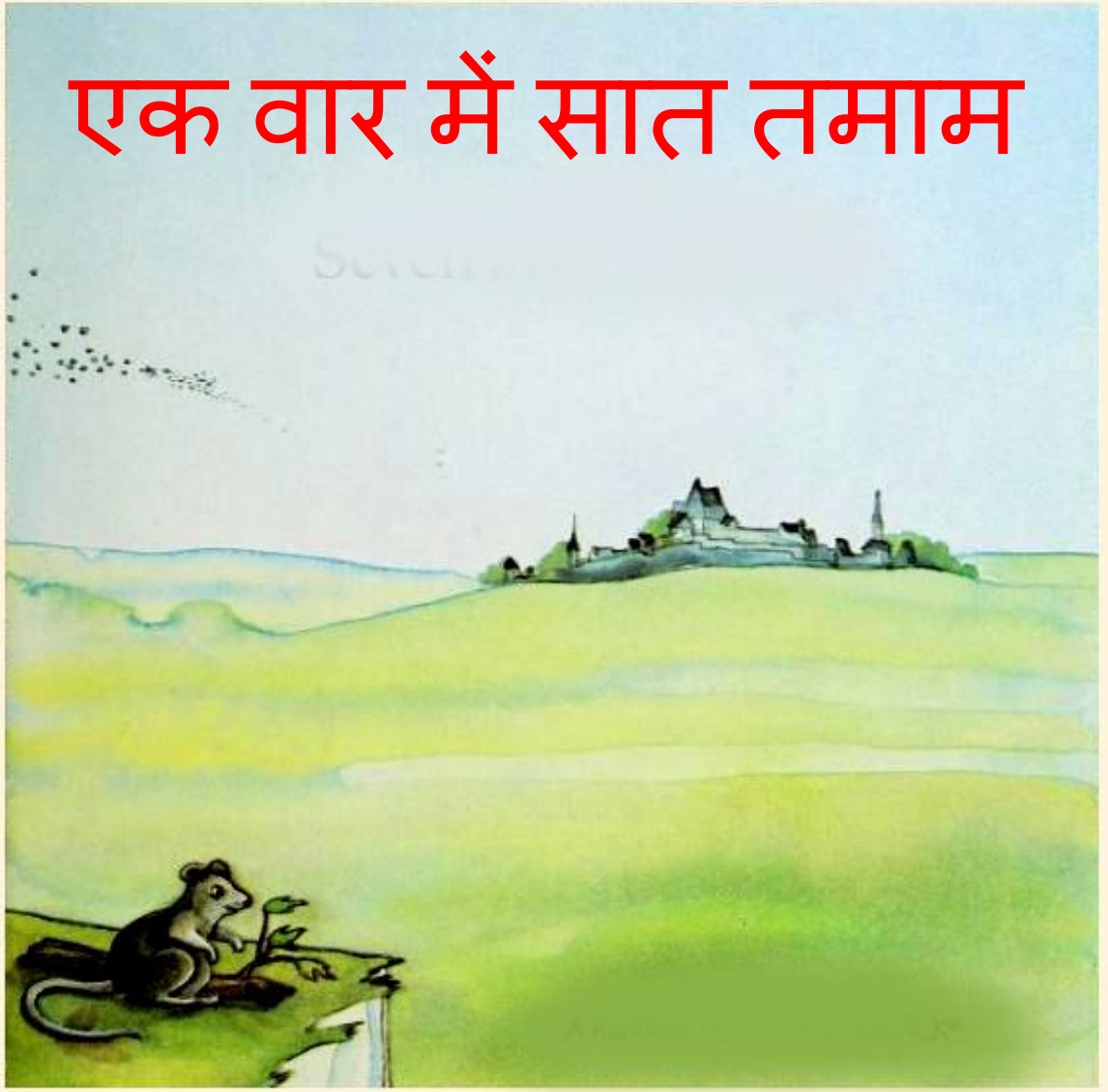

एक दिन एक छोटा दर्जी अपनी दुकान में बैठकर सिलाई कर रहा था. जब वो सिलाई कर रहा था,
तभी मक्खियों का झुंड उसकी रोटी और मीठी चटनी पर आकर बैठा. वो दर्जी का दोपहर का भोजन था.
दर्जी ने गुस्से में "शू! शू!" कहकर उन्हें भगाने की कोशिश की.
लेकिन मक्खियों पर उसका कुछ असर नहीं पड़ा. उन्होंने उसकी मीठी चटनी खा ली.

"यह लो!" छोटा दर्जी चिल्लाया, और उसने एक कपड़े से मक्खियों को कसकर मारा.

उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब एक ही वार में सात मक्खियाँ एक-साथ मर गईं.
"ठीक है," दर्जी खुद से काफी प्रसन्न हुआ. "मैंने एक ही झटके में सात को मार डाला!"

छोटे दर्जी को अपने पराक्रम पर इतना गर्व हुआ कि उसने एक बेल्ट बनाई जिस पर लिखा था :

"एक वार में सात तमाम".

फिर वो अपना भाग्य आज़माने निकला.

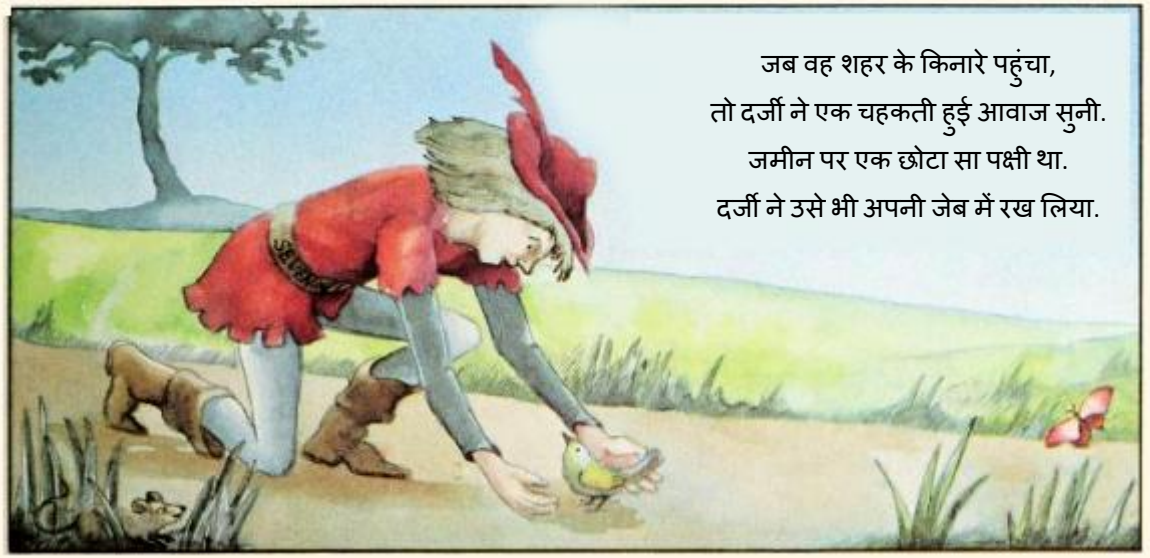

उसने अपनी बेल्ट पहनी, अपनी दुकान बंद की. उसने रात के खाने के लिए पनीर का एक टुकड़ा अपनी जेब में रख लिया.

जब वह शहर के किनारे पहुंचा, तो दर्जी ने एक चहकती हुई आवाज सुनी. जमीन पर एक छोटा सा पक्षी था. दर्जी ने उसे भी अपनी जेब में रख लिया.

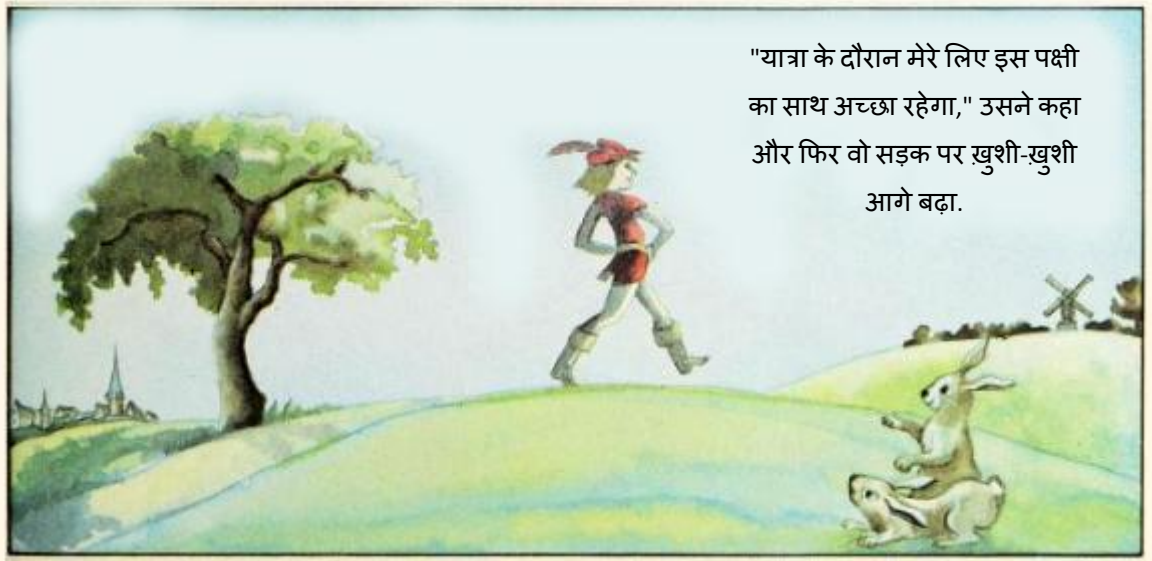

"यात्रा के दौरान मेरे लिए इस पक्षी का साथ अच्छा रहेगा," उसने कहा और फिर वो सड़क पर ख़ुशी-ख़ुशी आगे बढ़ा.

जल्द ही दर्जी एक राक्षस से मिला.
"शुभ दिन," दर्जी ने प्रसन्नता से
राक्षस का अभिवादन किया.
"तुम जाओ यहाँ से," राक्षस गरजा,
"नहीं तो मैं तुम्हारी हड्डी-पसली तोड़ डालूँगा!"
"तुम्हें पता नहीं कि मैं कौन हूँ," दर्जी ने कहा. और फिर उसने
राक्षस को अपनी बेल्ट पर लिखे शब्दों को पढ़वाया.
राक्षस ने सोचा कि दर्जी ने सात लोगों को एक ही वार मार
डाला था. "एक ही वार में सात!" वो गिड़गिड़ाया.
उसने अपनी अशिष्टता के लिए माफ़ी मांगी.

"चलो देखते हैं कि तुम कितने ताकतवर हो," राक्षस ने
कहा. उसने एक पत्थर उठाया और उसे इतना कसकर
निचोड़ा कि उसमें से एक बूंद पानी निकल आया.
"ज़रा तुम भी कोशिश करो!" उसने कहा.

दर्जी ने फटाफट सोचा. पत्थर उठाने का नाटक करते हुए
उसने अपने पनीर के टुकड़े को बाहर निकाला और उसे तब
तक निचोड़ा जब तक कि उसमें से पानी बाहर नहीं निकल
आया. "यह तो काफी आसान था," दर्ज़ी ने कहा.

"अरे वाह!," हैरान राक्षस ने कहा. "अच्छा फिर यह करो," राक्षस ने एक और पत्थर उठाया और उसे इतनी दूर फेंका कि वो दृष्टि से गायब हो गया.

"यह काम भी काफी सरल है," दर्जी ने कहा. जल्दी से उसने छोटी चिड़िया को अपनी जेब से निकाला. इससे पहले कि राक्षस देख पाता कि दर्ज़ी के हाथ में क्या है, उसने पक्षी को हवा में फेंक दिया. पक्षी उड़ गया और दृष्टि से ओंझल हो गया.

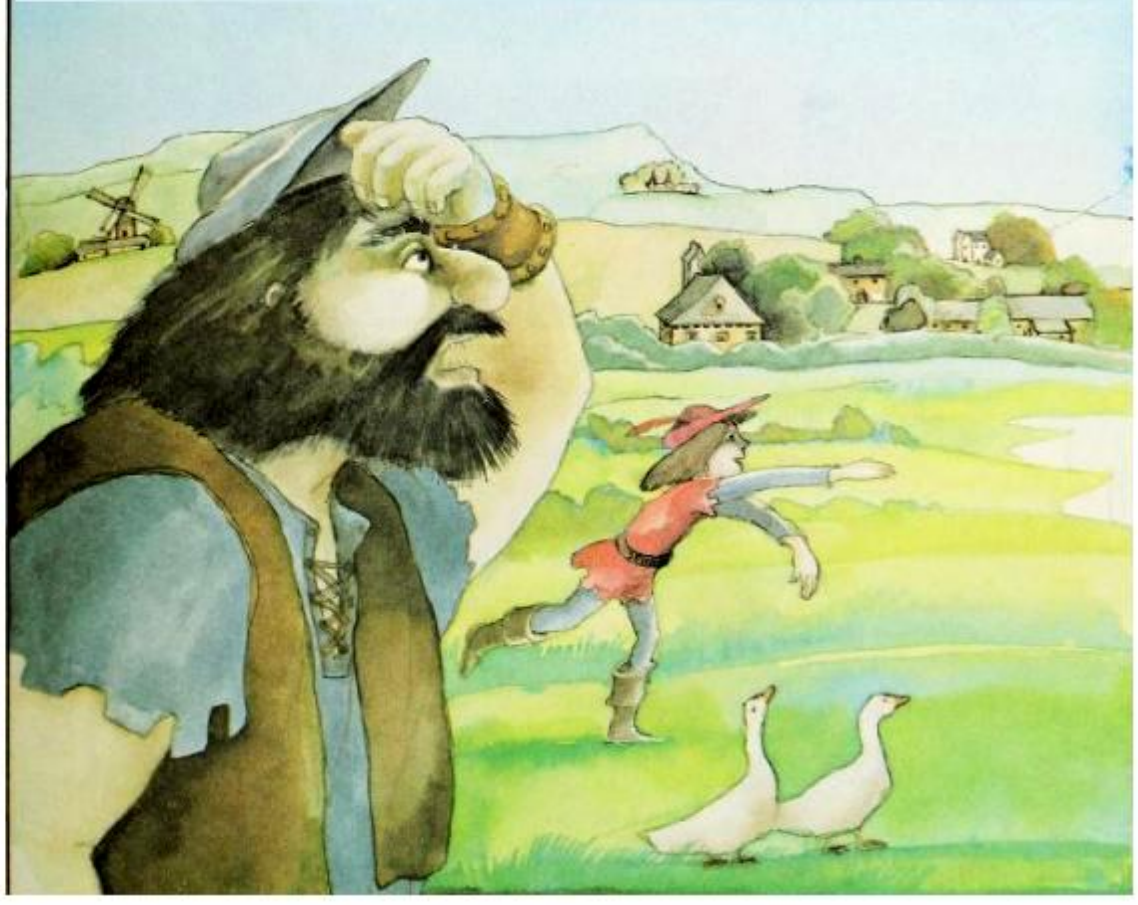

"पर यह एक काम है, जो मुझे यकीन है कि तुम नहीं कर पाओगे," राक्षस ने कहा.
"इस गिरे हुए पेड़ को मेरे महल तक ले जाने में मेरी मदद करो."
"इसमें क्या बड़ी बात है," छोटे दर्जी ने कहा.

एक कराह के साथ राक्षस ने पेड़ के बड़े तने को उठाया और वो उसे
लेकर आगे चला. जबकि राक्षस उस भारी तने को उठाये हांफ रहा था,
तब चतुर दर्जी एक शाख पर बड़े आराम से बैठ गया.

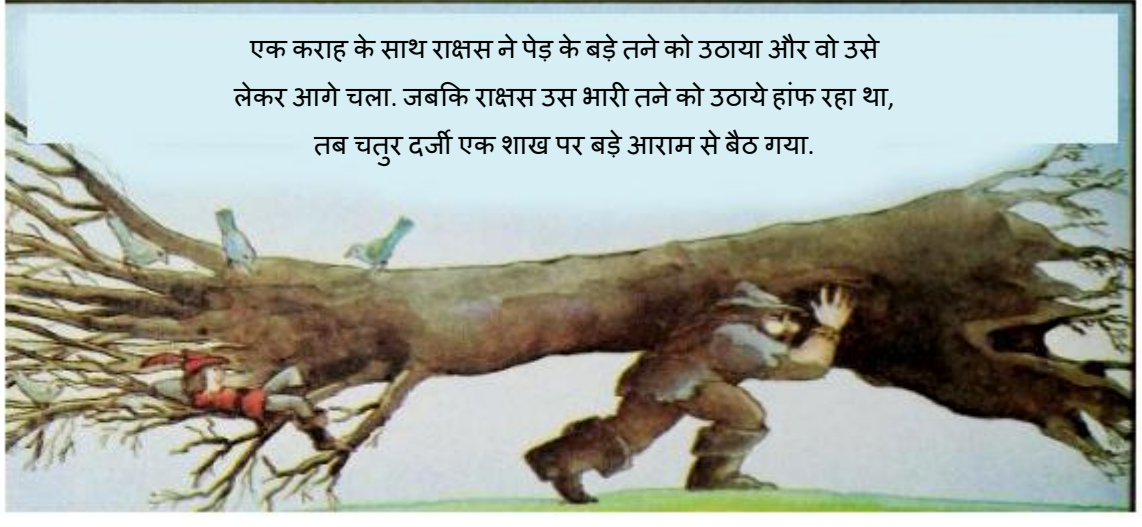

जल्द ही राक्षस को आराम करने के लिए रुकना और बैठना पड़ा. छोटा दर्जी शाखाओं से बाहर निकला
और उसने मदद करने का नाटक किया. "तुम इतने आसान काम से थक गए?" दर्ज़ी ने पूछा.
राक्षस ने अपना गुस्सा छिपाने की कोशिश की. "हालांकि तुम देखने में छोटे हो, पर तुम काफी
ताकतवर लगते हो," राक्षस ने धूर्तता से कहा. "चलो, मेरे घर चलो और मेरे भाइयों से मिलो."

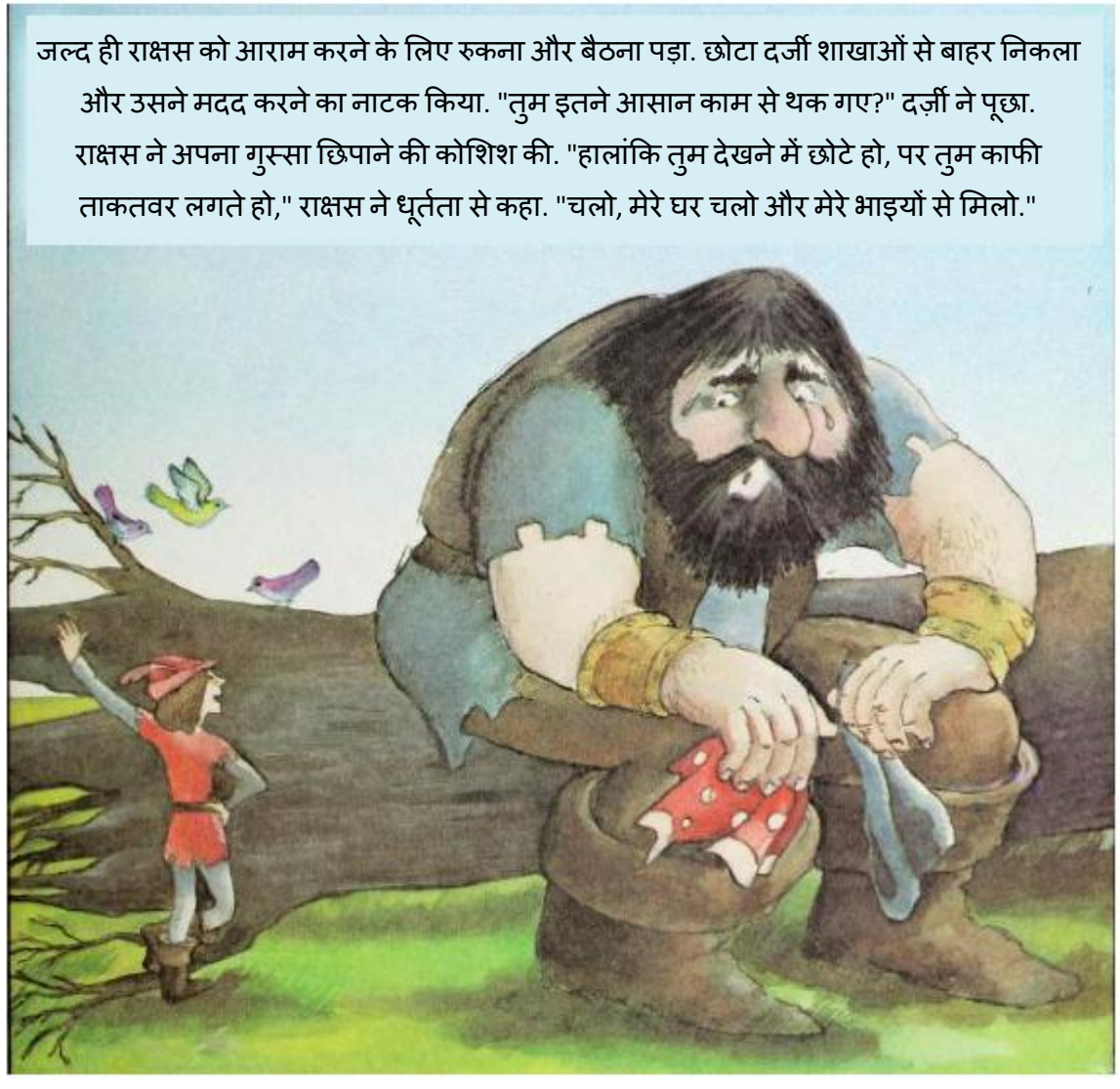

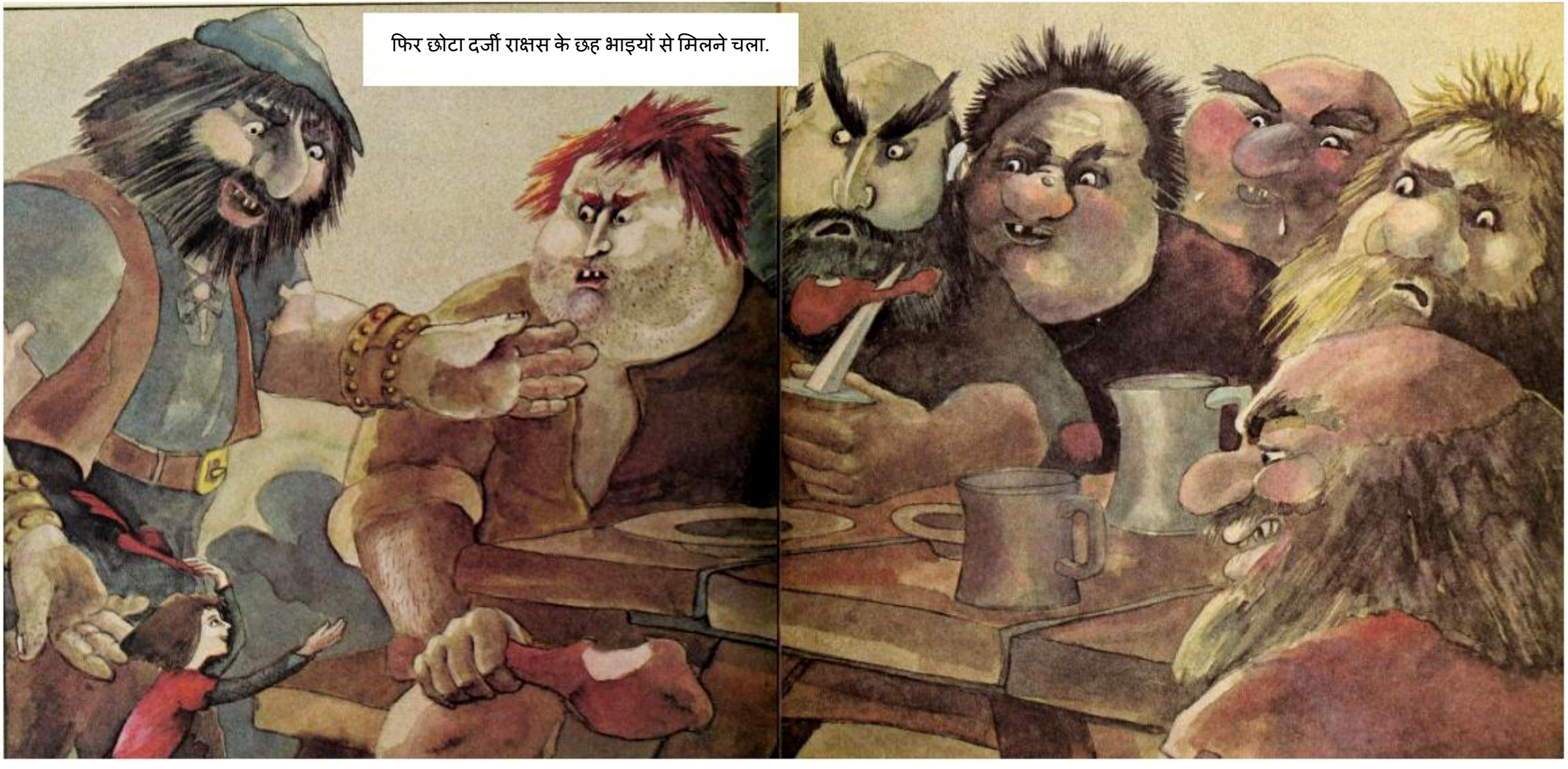
फिर छोटा दर्जी राक्षस के छह भाइयों से मिलने चला.

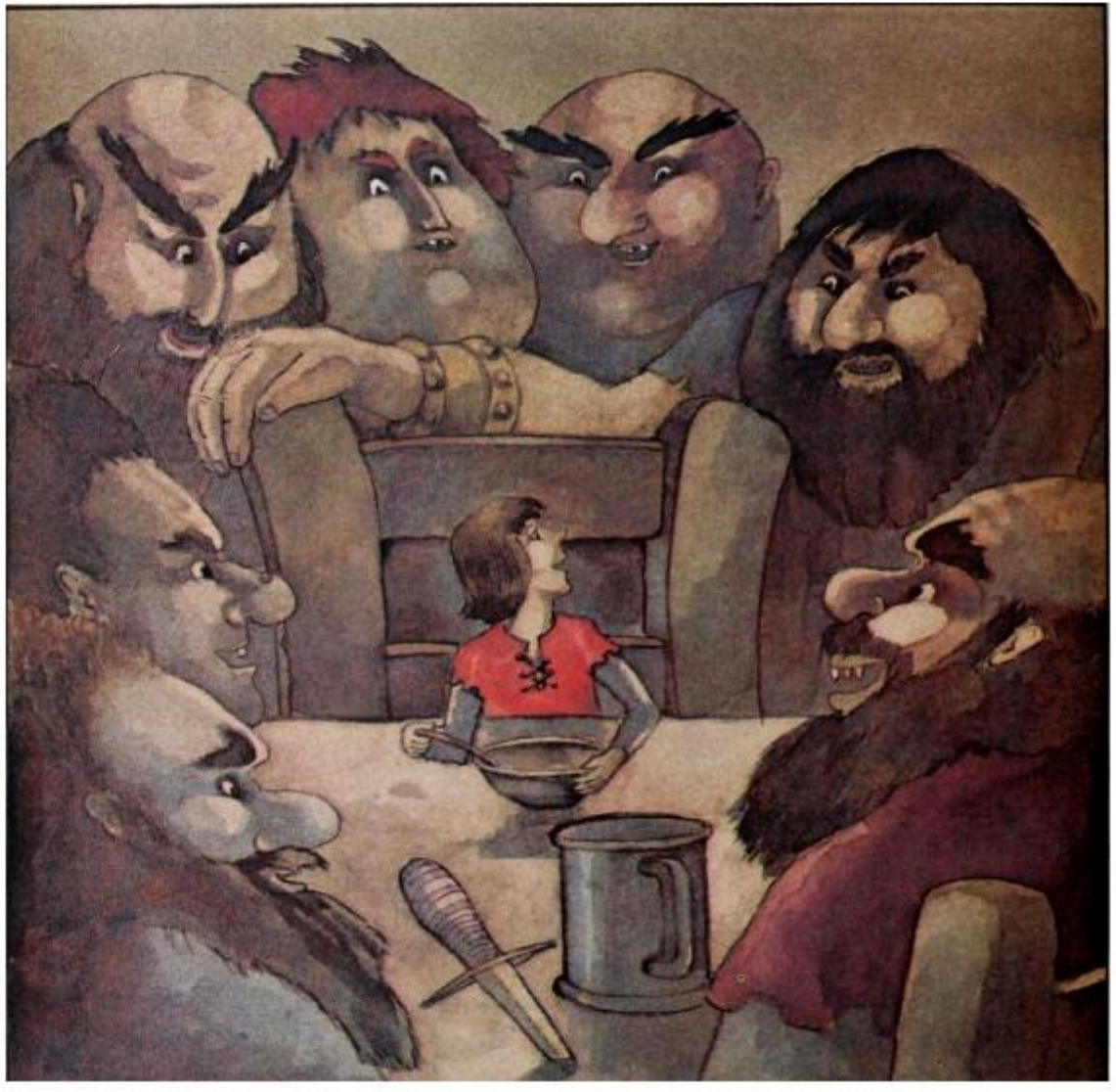

जब दर्जी ने उन्हें बताया कि उसने उनके भाई को कैसे हराया, तो सभी दिग्गज राक्षस जोर से हँसे. उन्होंने दर्ज़ी को बड़ा लज़ीज़ खाना खिलाया और फिर उसे उसका सोने का कमरा दिखाया. क्योंकि छोटे दर्जी के लिए पलंग बहुत बड़ा था इसलिए वो नीचे गलीचे पर ही लेटकर सो गया.

उस रात को दो राक्षस दर्जी के कमरे में चुपके से घुसे.

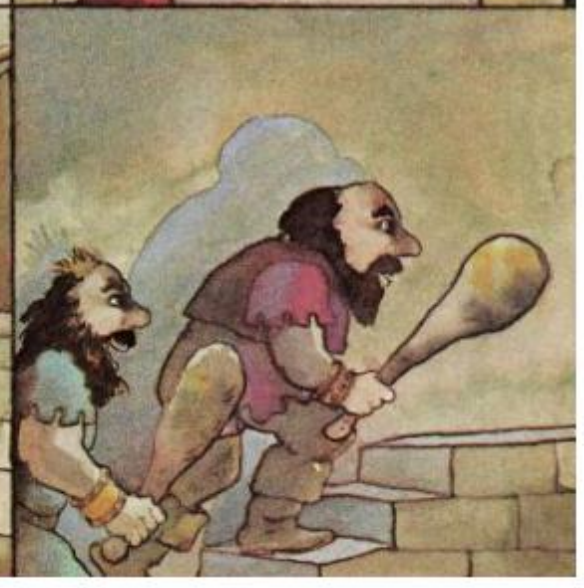

उन्होंने बड़े भारी गदों से पलंग की खूब पिटाई की.
"चलो उस चूहे का अंत हुआ!" उन्होंने एक-दूसरे से कहा.

पलंग पीटने के शोर से दर्जी की आँख खुल गई. वो अपने कमरे से बाहर आया.
उसने दोनों राक्षसों को यह कहते सुना कि उन्होंने दर्ज़ी को मार डाला था.

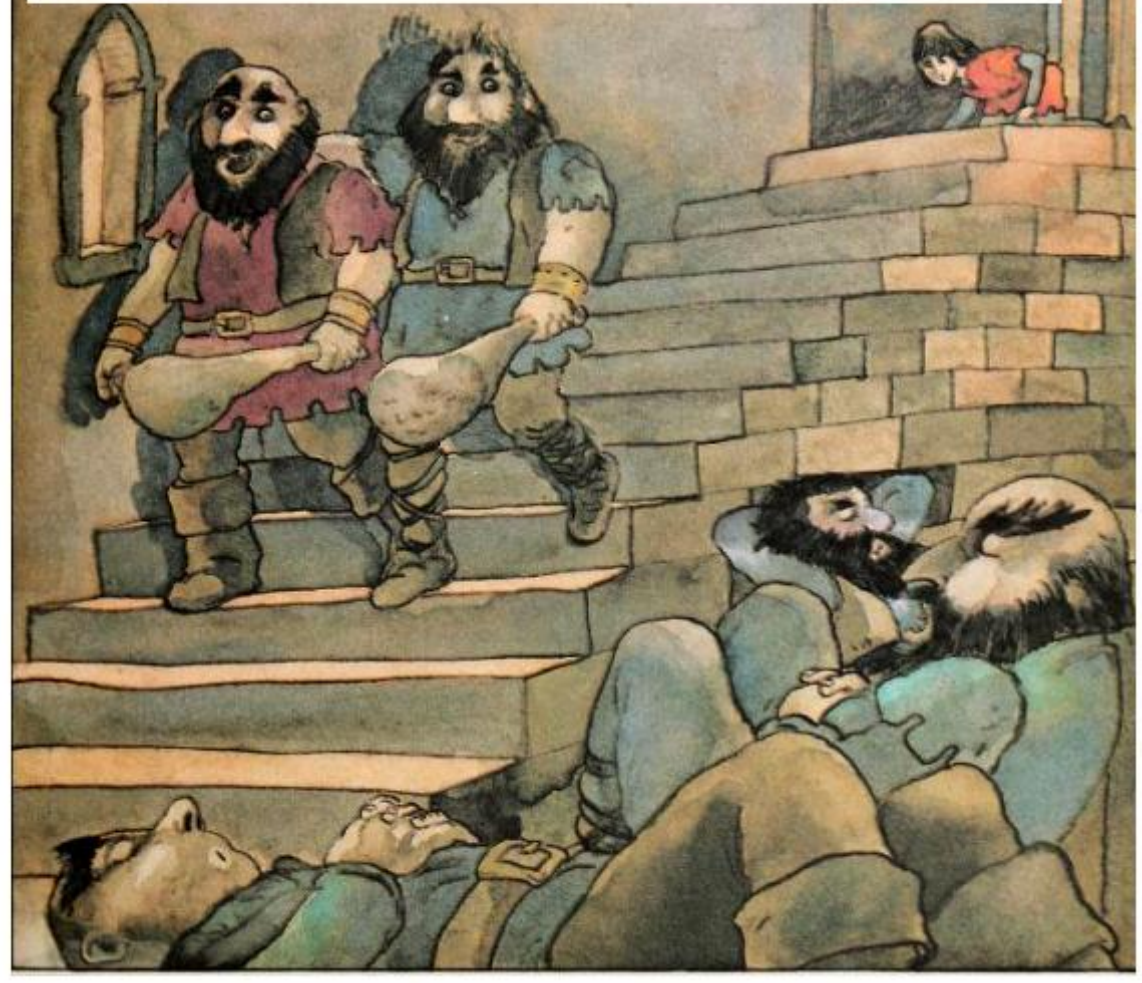

राक्षस फिर से सो गए. फिर दर्जी ने चुपके एक राक्षस के सिर पर एक सेब गिराया.

"तुमने मुझे क्यों मारा?" दूसरा राक्षस चिल्लाया. फिर उसने अपने निकटतम भाई को बहुत ज़ोर से मारा.

दर्जी ने एक और राक्षस के सिर पर सेब गिराया. उससे तीसरे राक्षस से तुरंत अपने चौथे भाई को नाक पर मारा.

इससे कुछ ही देर में राक्षसों में आपस में भयानक लड़ाई शुरू हो गई. दर्जी ने एक सुरक्षित दीवार के ऊपर बैठकर राक्षसों को लड़ते देखा.

यह लड़ाई तब तक चलती रही जब तक सभी राक्षस धाराशाही नहीं हो गए.
उसके बाद छोटे दर्जी ने उन सभी को बांध दिया.
फिर दर्जी एक बार दुबारा अपने भाग्य की तलाश में बाहर निकला.

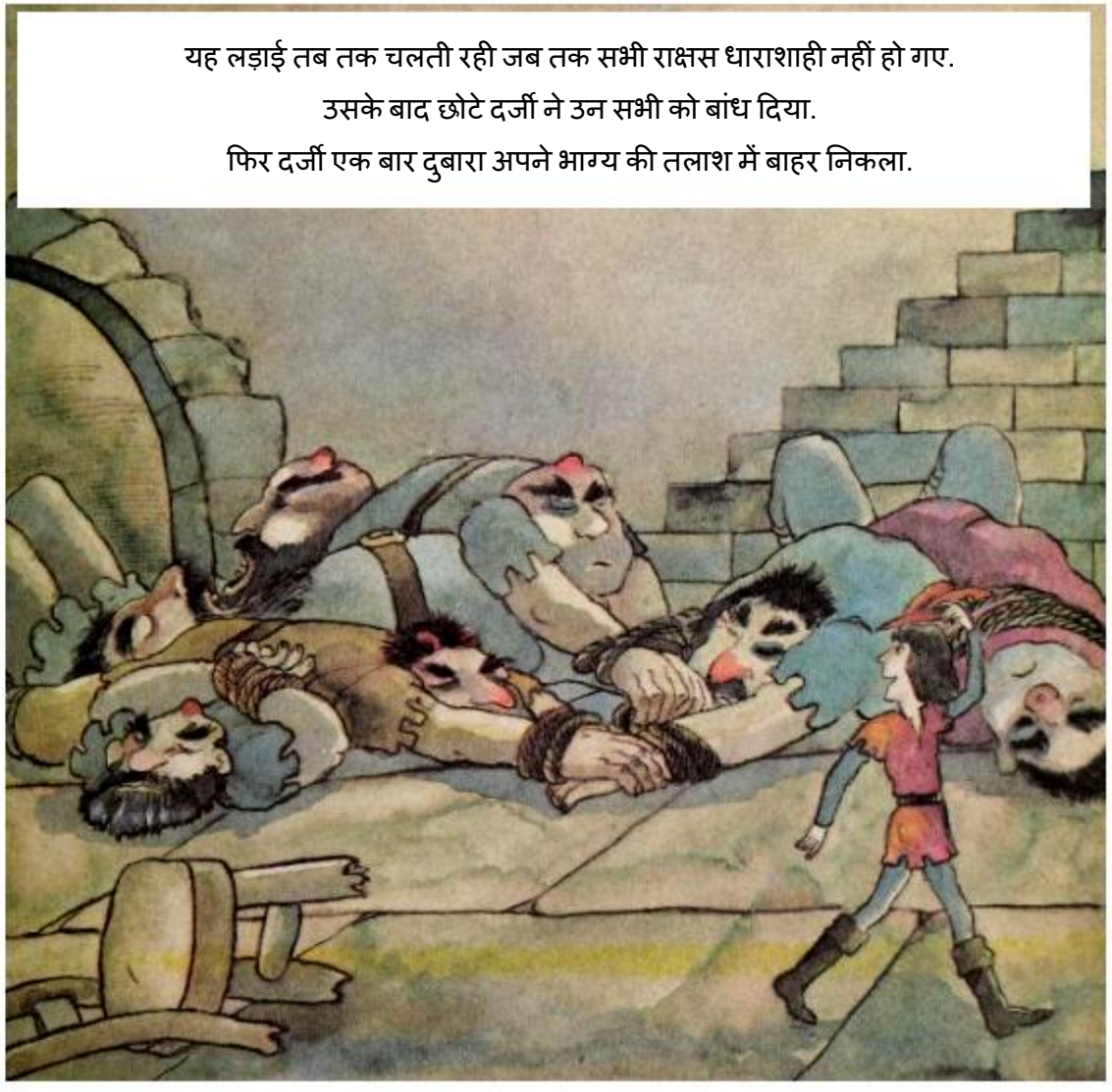

सुबह तक दर्जी शहर में पहुंच गया.
वहां लोग उन्माद में चारों ओर दौड़-भाग रहे थे.
हर जगह सैनिक थे.

"यह सब हंगामा क्यों है?" छोटे दर्जी ने पूछा.
"राक्षस!" एक सैनिक ने जवाब दिया. "राक्षस यात्रियों को लूट रहे हैं, हमारे घरों को नष्ट कर रहे हैं, और हमारे सभी मवेशियों को खा रहे हैं! उन राक्षसों ने इतना कहर मचाया है कि जो भी व्यक्ति उनसे छुटकारा दिलाएगा, राजा उससे अपनी बेटी की शादी करने को तैयार है."
"ठीक है, अब आपको उन राक्षसों के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है," छोटे दर्जी ने कहा, "क्योंकि मैंने उनको पूरी तरह तबाह कर दिया है."

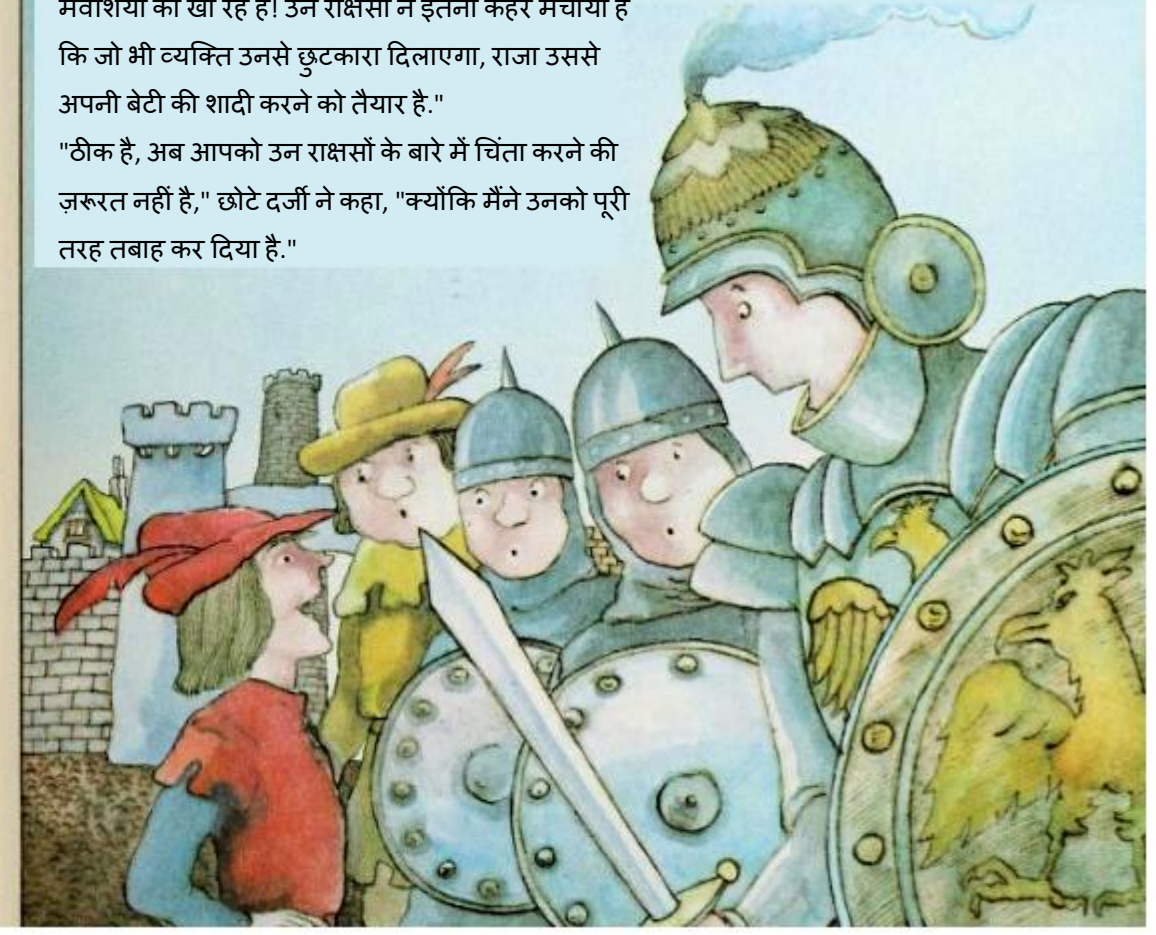

छोटे दर्जी की कहानी पर सैनिकों को यकीन नहीं हुआ. लेकिन अंत में वे दर्ज़ी को राजा के पास ले गए.
"तुम?" राजा ने खिल्ली उड़ाने के लहज़े के कहा. "तुम जैसा छोटा आदमी उन दिग्गज राक्षसों को भला
कैसे हरा सकता है? मेरे सबसे बहादुर सैनिक भी ऐसा करने में नाकाम रहे."
जहाँ तक राजकुमारी की बात थी उसे छोटा दर्जी इतना पसंद आया
कि वो उसकी कोई भी बात मानने को तैयार थी.

"महामहिम आप मेरे साथ चलें और खुद अपनी आंखों से देखें," दर्जी ने कहा.
और उसके बाद वो राजा, सैनिकों और नगरवासियों को राक्षसों के महल में ले गया.

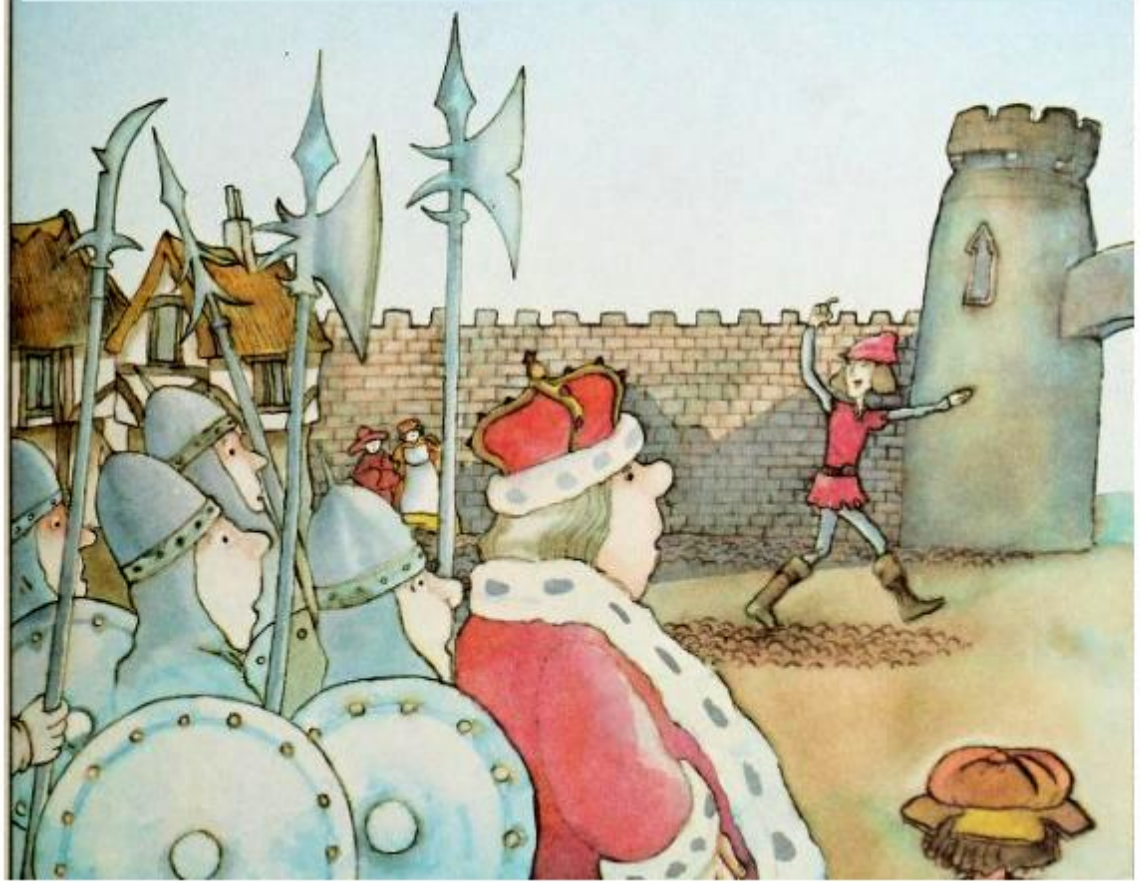

जब राजा ने धाराशाही राक्षसों के हाथ-पैर बंधे देखे तो उन्होंने कहा,
"क्यों, यह तो कम-से-कम सौ आदमियों का काम लगता है!"

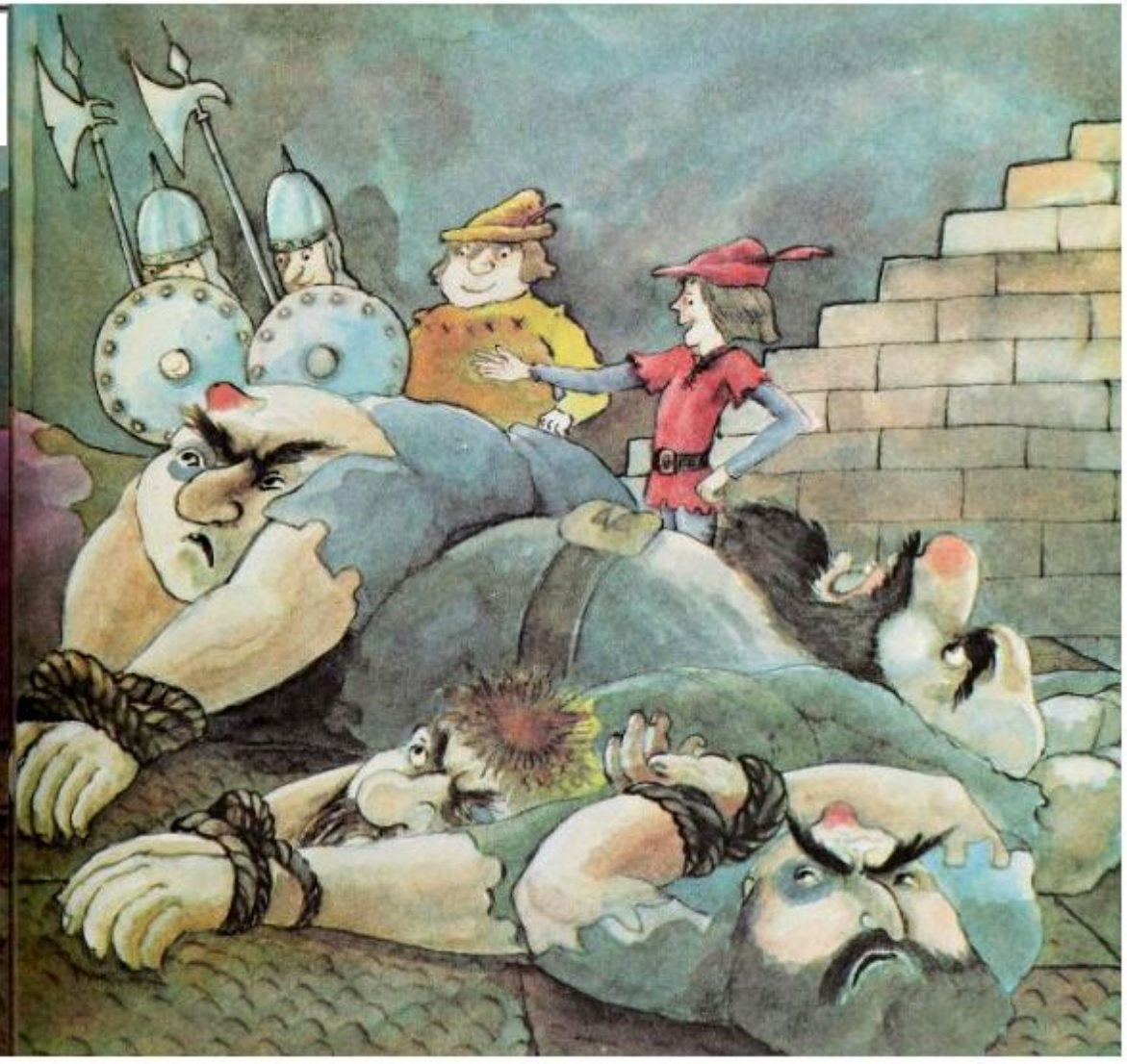

राजा ने राक्षसों को देश से भगा दिया.

... और छोटे दर्जी ने राक्षसों को चेतावनी दी कि
अगर वे कभी दुबारा वापस आए तो वो उनकी
हड्डी-पसली तोड़ डालेगा.

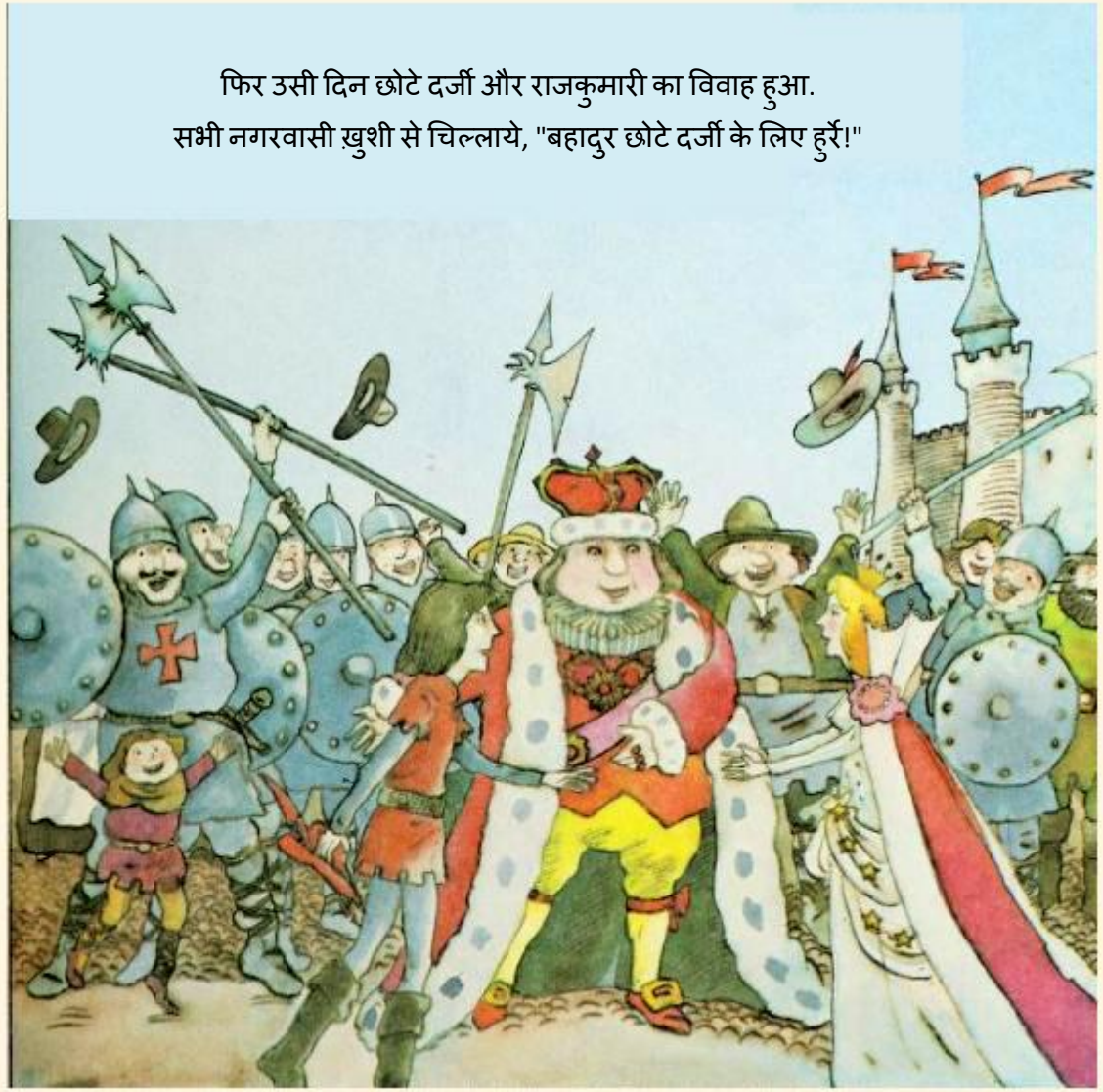
फिर उसी दिन छोटे दर्जी और राजकुमारी का विवाह हुआ.
सभी नगरवासी ख़ुशी से चिल्लाये, "बहादुर छोटे दर्जी के लिए हुर्रे!"

छोटा दर्जी महल में रहने लगा. वाकई में उसकी किस्मत बहुत अच्छी थी.
और खुद को यह याद दिलाने के लिए कि वो सब कैसे हुआ,
दर्जी हमेशा एक नीले रंग की बेल्ट पहनता था जिसपर लिखा था –

"एक वार में सात तमाम".

समाप्त